मूल्य रु. ५-००

मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख संलग्न अंक १२५ सितम्बर-२०१७

कालुपुर मंदिर में
श्री गणेशोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

डीसा (बनासकांठा) गांव में पारायण प्रसंग पर सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा सभा में पधारे हुए अनेक धामो के संत हरिभक्त ।(२) जूनागढ मंदिर के संत के अक्षरवास निमित्त कालुपुर मंदिर में रसोई प्रसंग पर सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन करते हुए जूनागढ के संत ।(३) कांकरिया मंदिर में पारायण प्रसंग पर संबोधित करते हुए अहमदाबाद मंदिर के महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी ।(३) कोटा (राजस्थान) में मंदिर तथा धर्मशाला का तेजगति से निर्माण कार्य हो रहा है।

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद-आज्ञा से

जन्म स्थान मंदिर उद्घाटन महोत्सव-छपैया

३१ अक्टूबर से ४ नवम्बर-२०१७

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ११ ● अंक : १२५

सितम्बर-२०१७

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	सुदर्शन चक्र	०६
०४.	श्री स्वामिनारायण की भजन करो	०८
०५.	प.पू. महाराजश्री के मुख से समयोचित संप्रदाय के लिये हितकारी अमृतवचन	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०७.	सत्संग बालवाटिका	१५
०८.	भक्ति सुधा	१८
०९.	सत्संग समाचार	२१

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

बीजु सर्वे अपराधभगवान माफ करें छे, पण भगवानना भक्तनो द्रोह करे ए अपराधने भगवान माफ नथी करता । माटे भगवानना भक्तनो कोई प्रकारे द्रोह करवो नहीं । अने वडी भगवान सर्वे अपराधथकी भगवानना आकारनुं खंडन करवुं ए मोटो अपराधछे । ते माटे ए अपराधतो क्यारे पण करवो नहीं अने ए अपराधकरे तो एने पंच महापाप करतां पण अधिक पाप लागे छे । अने भगवान तो सदा साकार मूर्ति छे । तेने जो निराकार समझवा एज भगवानना आकारनुं खंडन कर्युं कहेवाय छे । अने पुरुषोत्तम एवा जे भगवान ते जे ते कोटी सूर्य चंद्र सरखुं तेजोमय एवुं पोतानुं अक्षरधाम तेने विषय सदा दिव्याकार थका विराजमान छे । (ग.प्र.प्र. ७१)

प्रिय भक्त लोग एक तो भगवान के भक्त का द्रोह जान या अनजान में कभी नहीं करना चाहिए तथा भगवान तो सदा साकार हैं । हम सभी को कल्याण तथा मोक्ष को देने वाले हैं ।

आगामी अपने उत्सव में दशहरा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ४५ वाँ प्रागट्योत्सव तथा दीपावली समूह शारदापूजन नूतन वर्ष का अन्नकूटोत्सव तथा ४ नवम्बर को सर्वोपरि धाम छपैया जन्म स्थान मंदिर का उद्घाटन एवं उत्तर गुजरात के हार्द के समान कलोल में शिखरी मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव इत्यादि अनेक महोत्सव धूमधाम से समग्र धर्मकुल की उपस्थिति मनाया जायेगा । सभी हरिभक्त ऐसे उत्सवों में भाग लेकर अपने जीवन को सार्थक एवं कृतार्थ बनायें ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

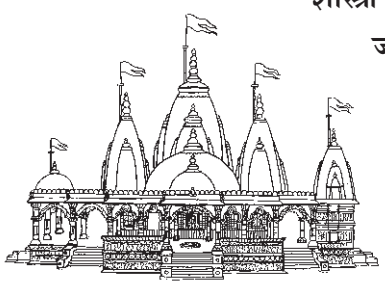

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा

(अगस्त-२०१७)

३ से ५ श्री स्वामिनारायण मंदिर लुइसवील तथा शिकागो (अमेरिका) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

६ से ७ श्री स्वामिनारायण नूतन मंदिर वुलवीच (यु.के.) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर डीसा (बनासकांठा) कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

१४ से २२ श्री स्वामिनारायण मंदिर इस्ट लंडन (यु.के.) ३० वें पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर चेरहील (अमेरिका) १९ वें पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२८ से ३० श्री स्वामिनारायण मंदिर कार्डिफ (यु.के.) १० वें तथा स्ट्रेधाम मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अगस्त-२०१७)

५ से ८ श्री स्वामिनारायण मंदिर वुलवीच (यु.के.) पुनः प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

१७ से २४ श्री स्वामिनारायण मंदिर चेरीहील (अमेरिका) १० वें तथा कोलोनिया मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण

२५ से ३ श्री स्वामिनारायण मंदिर गेटवील-क्रोली (यु.के.) ११ वें पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण । श्री स्वामिनारायण मंदिर कार्डिफ (यु.के.) १९ वें पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण तथा लेस्टर एवं बोल्टन मंदिर सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।

सुदर्शन चक्र

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

चतुर्भुज भगवान श्री विष्णु के दक्षिण हाथ में सुदर्शन चक्र का दर्शन सर्वदा मंगलकारी माना गया है। भगवान सदा सुदर्शन चक्र को साथ में ही रखते हैं। महाभारत के युद्ध में शस्त्र के विना युद्ध में जाने की प्रतिज्ञा थी। फिर भी अर्जुन की सहायता के लिये सुदर्शन चक्र धारण करना पड़ा था। सुदर्शन चक्र का प्रसंग पुराणों में अनंत है। अर्थात् सुदर्शन चक्र की कथा जानना खूब आवश्यक है।

प्राचीन समय में एकबार दैत्य गुरु शुक्राचार्य के ऐश्वर्य से स्वर्ग की सत्ता प्राप्त करली ये। देवों को सत्ताविहीन कर दिया गया। दैत्य गुरु के सहयोग से दीर्धकाल तक स्वर्ग की सत्ता का उपभोग किया। दैत्यों के शासन से देव तेज रहित होकर दिशाशून्य हो गये। उसकी असर मृत्युलोक में भी दिखाई देने लगी। सात्विक कर्म चन्द्र हो गया। तामसी कर्मो की बोलबाल हो गई।

दुःखी होकर देवता लोग पितामह ब्रह्मा की शरणागति में गये। अपनी वेदना ब्रह्म से कहे, जगत्स्त्रष्टा देवों के साथ शेषशायी भगवान नारायण की शरण में गये।

स्तुति करने लगे। भगवान स्तुति सुनकर कहने लगे कि हे देवो ! आपलोग अपने आने का कारण कहिए।

इन्द्रादि देव स्वयं को दैत्यो के त्रास में से मुक्त होने के लिये तथा स्वर्ग की सत्ता को प्राप्त करने की प्रार्थना की। दुःख भंजन भगवान बोले कि हे देवो ? आप लोगों की वेदना से हम भी दुःखी हैं। इसलिये थोडे समय में आप सभी को कष्ट में से मुक्त करे देंगे।

दैत्यों के तपोबल, ऐश्वर्य को देखकर भगवान इस उत्तरदायित्व का भगवान भोलेनाथ को देने का संकल्प किया। निश्चित रुप से भोलनाथ सहयोग करेंगे। एकवार पवित्र समय में एक सहस्त्र कमल पुष्प से भगवान शिव की सहस्त्रार्चन करने लगे।

भगवान विष्णु द्वारा अर्पण किये जाते हुए कमल दल महाकाल प्रत्यक्ष स्वीकार कर रहे थे। यह देखर दैत्यो में हाहाकार मच गया, यदि यह पूजा निर्विघ्न पूर्ण होजायेगी तो हमलोगों की स्वर्ग की सत्ता समाप्त हो जायेगी। इस लिये किसी तरह इस पूजा कार्य को निर्विघ्न पूरा नहीं होने देना है।

दैत्य विष्णु–शिव में भेद डालने में समर्थ नहीं थे। इसलिये पशुपति परमात्मा का वाहन मूशक को निमित्त बनाकर हजार कमल में से एक कमल मूशक चुराले गया।

लक्ष्मीपती भगवान विष्णु विष्णुसहस्त्रनाम से कमल दलन अर्पण करे रहे थे। बाद में एक नाम बाकी रह गया और कमल एक कम हो गया, यद्यपि १ हजार कमल थे क्यों घट गये ? अन्तर्यामी भगवान समझ गये कि चूहा किसी का निमित्त बनकर कमल उठा ले गया है। लेकिन भगवान संकल्प से बधे हुए थे इसलिये उस सहस्त्रार्चन को पूरा करने के लिये अपने नेत्र कमल को निकाल कर अर्पण किया।

यह देखकर भगवान शिवप्रसन्न हो गये और उस नेत्र को लेकर अपने ब्रह्म स्थान में धारण किये इसी से उन्हें त्रिनेत्र कहा जाता है। भगवान नरनारायण को सहस्त्र कमल के बदले में सहस्त्रनेत्र का वरदान दिये। भगवान सहस्त्राक्ष बने।

शिवजी बोले कि, हे प्रभु ! सेवा वताइये, आपकी मनोकामना पूर्ण करुं ?

पार्वती पति भगवान से वैकुंठपति बोले कि हे प्रभु ! देवों को संकट में से मुक्त होने का आप उपाय बताइये।

मात्र आप ही एक है जो दैत्यों को नाश कर सकते हैं।

कैलाशपति भोलानाथ स्वयं अपने ऐश्वर्य शक्ति तप के तेज:पुंज स्वरुप स्वयं को सुदर्शन चक्र के रुप में प्रगट किये। उसी चक्र को भगवान विष्णु अपने हाथ में धारण किये।

भगवान के दक्षिण हाथ में सुदर्शन चक्र के तेज को देखकर दैत्य स्वर्ग की गद्दी छोड़कर पलायन हो गये। परिणाम स्वरुप देवतालोग स्वर् की सत्ता को पुन: प्राप्त किये। उसी समय से भगवान विष्णु सुदर्शन चक्र को अपने दक्षिण हाथ में धारण करते हैं। वह शिव के अंश रुप मैं विरामजान रहते हैं. सुका अर्थ शुभ, दर्शन का अर्थ दृष्टि, चक्र का अर्थ गतिशीलता। ब्रह्मा, विष्णु, शिव की समन्वय शक्ति ही सुदर्शन चक्र है।

सुदर्शन स्वभावत: शुभ तथा शांत है, परंतु जब धर्म ग्लानि होती है, धर्म पर बधा करने वाले प्रभाव शाली हो जाते हैं भक्त को लोग जब संकट में आते हैं तब सुदर्शन चक्र भयानक रुप लेते हैं। सुदर्शन विष्णु के रुप में शांत है तो शि के रुप में उग्र है।

पुराणों में एक कथा आती है कि जगतजननी जगदम्बा आद्य शक्ति के इक्यावन शक्तिपीठ का प्रादुर्भाव सुदर्शनचक्र में से हुआ है। इसके अलांवा देवी के शस्त्र भी सुदर्शन चक्र में से प्रगट हुए हैं।

देवों को भी दुर्लभ ऐसे मनुष्यों का अवतार जिस में भगवानने मनुष्य के शरीर में छ चक्रो की शक्ति प्रदान की है। योगी योग मार्ग से अथवा चक्र के बीज मंत्र के जप से शरीर के चक्र को गतिशील करते हैं। और शक्ति का देह में अनुभव करते हैं।

भगवान श्री नारायण परब्रह्म परमात्मा की जो मनुष्य पवित्र भाव से, मन, कर्म, वचन से नित्यपूजा करते हैं उसकी सहायता में सुदर्शन चक्र अखंड रक्षा करते हैं।

भगवान श्री नारायण के जितने भी अवतार हुए, उन सभी के दाहिने हाथ में सुदर्शन चक्र का दर्शन होता है। इसके अलांवा शालिग्राम के भीतर भी सुदर्शनचक्र अंकित है।

श्रीमद् भागवत के नवम स्कंधमें एक कथा आती है कि परम भक्त अंबरीष राजा नित्य षोडशोपचार से श्रीविष्णु भगवान की पूजा करते थे। एकादशी का व्रत करते थे। एकवार दुर्वाशा मुनि पधारे। दुर्वाशा मुनि स्नानादिक क्रिया में अधिक समय लगादिये, ब्राह्मणोने अम्बरीष राजा को तुलसीपुत्र चरणोदक से एकादशी व्रत की पारणा करने को कहा। यह देखकर दुर्वाशा कोपायमान हो गये। परिणाम स्वरुप अंबरीष के गर्व को दूर करने के लिये एक कृत्या को पैदा किये, लेकिन अंबरीष प्रतिदिन सुदर्शन चक्र की पूजा करते थे इसलिये उनकी रक्षा के लिये सुदर्शन चक्र प्रगट होकर कृत्या को भस्म कर दिये और दुर्वाशा के पीछे चल दिये। तीनो लोक में उन्हें बचाने वाला नहीं मिला, तब भगवान शिव की सहायता से दुर्वाशा मुनि अंबरीष के पास आये और राजा अंबरीष की प्रार्थना किये तो सुदर्शन चक्र शांत हो गये। इसका तात्पर्य यह कि दुर्वाशा के तपोबल की अपेक्षा अंबरीष की पूजा का बल विजयी हुआ। सुदर्शन चक्र की सहायता जिन्हें चाहिए वे चक्र धारी भगवान श्रीविष्णु की नित्य पूजा करें।

स्वामीने अपनी बातो में लिखा है कि अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने अपने आश्रितों की रक्षा के लिये शिक्षापत्री रुपी सुदर्शन चक्र दिया है। जो शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन करते हैं, जो शिक्षापत्री की नित्य पूजा करते हैं, उन भक्तों की शिक्षापत्री रुपी सुदर्शन चक्र से रक्षा होती है।

जेतलपुरधाम में विराजमान बेलदेवजी महाराज के हाथ में हल, मूशल, सुदर्शनचक्र, शंख विराजमान रहता है। अर्थात् दो आयुधरुद्र स्वरुप है तथा दो आयुष नारायण स्वरुप के हैं। इसका मतलब बलदेवजी दो स्वरुप में बिराजमान है। स्वामिनारायण भगवानने अपने हाथों से प्रतिष्ठित किये हुए बलदेवजी महाराज का स्वरुप उभय ऐश्वर्य संपन्न कहा जायेगा। भक्तों की सभी मनोकामना पूर्ण करते हैं।

श्री स्वामिनारायण की भजन करो

- शा. स्वा. निर्गुणदासजी
(अमदावाद)

॥ स्रग्वीणीवृत्तम् ॥

ब्रह्मधामाधिपंत पुंप्रकृत्याक्षिप्तं वन्दितं निर्ज्जरैः पण्डितैर्नन्दितम् ।
धार्मिकं स्वामिनं सदगुणं श्रीहरिं स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ॥१॥
मानदं कारणं शर्मणस्तारणं सागरादुःखतोजन्मिनां सद्गतिम् ।
ज्ञानिनं ध्यनिनं योगिनं निर्ममं स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ॥२॥
वासुदेव जगत्पावनं सर्वदावारणेन्द्रं यथाधावमानं तथा ।
सत्वरं सिद्धिदं सिद्धिपं सत्पतिं स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ॥३॥
देवदेवेशं दयासागरं नागरं श्रीहरं श्रीहरं नीलकंठाभिधम् ।
धर्मवंश्यावनं धर्मरक्षाभवं स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ॥४॥
छुप्पैयावासिनं पद्मसिंहासनं चन्द्रबिम्बाननं कन्दमूलाशनम् ।
तापसं वर्णिनां नैष्ठिकानां गुरूं स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ॥५॥
मस्तकेपिंगलां संदधानं जटां मेखलां मौजिकां चांसयुग्मेकटौ ।
चर्मचेणं सदानन्दकन्दमुदां स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ॥६॥
सिंहशार्दुलगौव्यालनागादिभिर्जन्तुभिर्दुर्गमे दुष्टभीकानने ।
पद्यमानं हिमागस्य चानेकशः स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ॥७॥
पुष्पहारावलिं दीर्घदोर्दण्डकं वेदवाचं नराकारमण्डस्थितम् ।
कंजशोणाम्बकं मेधनिम्नस्वनं स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ॥८॥
पापहं वर्णिनावासुदेवेन शं स्तोत्रमेतत्कृतं श्रीहरेच्छ्याखिलं ।
यः कथेदयः पठेदन्तः प्रत्यहं मानवः प्राप्नुयान्मंगलं सोऽत्रहि ॥९॥

॥ इति श्रीवासुदेवानंदवर्णिविरचित श्रीहरिस्तोत्रं समाप्तम् ॥

भगवान श्री स्वामिनारायण की आज्ञा से जिन्होंने श्रीमद् सत्संगिभूषण नामक महाग्रन्थ भक्ति शास्त्र की रचना की ऐसे सद्गुरु वर्णिराज श्री वासुदेवानंदजी अपने इष्टदेव भगवान श्रीहरि का प्रताप कैसा है जिसे यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। हे मन ! परमात्मा को छोड़कर अन्य किसी की भजन मत करे कारण यह कि सतयुग में स्वयं परमात्माने जीवों के कल्याणार्थ एक अक्षरवाला नाम ॐ के जप की आज्ञा की थी। इसी के जप से सर्वसिद्धि की प्राप्ति होती थी। त्रेतायुग में दो अक्षर वाले ''राम'' नाम के जप से सभी प्रकार के मनोरथ पूर्ण होते थे। द्वापर युग में साढेतीन अक्षरवाले 'कृष्ण' नाम के जप करने से सभीकार्य सिद्ध होते थे। इसके बाद आया कलियुग इस में षडक्षरी नाम स्वामिनारायण नाम का जप करने से सकल मनोरथ की सिद्धि मिलेगी ऐसा सभी शास्त्रों का वचन है।

ब्रह्मधामाधिपंत पुंप्रकृत्याक्षिप्तं वन्दितं निर्ज्जरैः पण्डितैर्नन्दितम् ।
धार्मिकं स्वामिनं सदगुणं श्रीहरिं स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ॥१॥

परमेश्वर के साकार स्वरुप के रहने का जो स्थान विशेष उसे भगवान का धाम शास्त्रों मे कहा गया है। भगवान के निवास का अनेक नाम है - गोलोक धाम, वैकुंठधाम श्वेत द्वीप धाम, अक्षरधाम इत्यादि। वे सर्वोपरि अविनाशी ऐसे ब्रह्मधाम के अधिपति जो पुरुषप्रकृति इस दो स्वरुपों से जगत की सृष्टि करते हैं। बड़े बड़े देवता जिनका वंदन करते हैं, विद्वान लोग जिसके गुणों का गुणानुवाद करते हैं, जिसके भीतर धार्मिकता का भाव है सद्गुणों का भंडार है और सम्पूर्ण जगत का स्वामी, नियन्ता है, ऐसे साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्रीहरि जो स्वामिनारायण नाम से पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं, उस परमेश्वर का हे मनुष्यो आप लोग भजन करों ॥१॥

मानदं कारणं शर्मणस्तारणं सागरादुःखतोजन्मिनां सद्गतिम् ।
ज्ञानिनं ध्यनिनं योगिनं निर्ममं स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ॥२॥

इस जगत में मान की इच्छावालों को मान देने वाला है। अनंतकोटि ब्रह्मांड की उत्पत्ति का कारण हैं। जीवों को संसार सागर से पार उतारने वाले हैं। इसी लिये आत्मा परमात्मा के स्वरुप को जानने वाले ज्ञानियों में वे श्रेष्ठ हैं। अष्टांग योग की साधना करने वाले तथा मौन धारण करके आत्म स्वरुप में स्थिर करने वाले जिन्हें अपने हृदय में धारण करते हैं ।ऐसे साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण पृथ्वी पर विचरण करते हैं, उस परमेश्वर का हे मन तूं भजन कर ॥२॥

वासुदेव जगत्पावनं सर्वदावारणेन्द्रं यथाधावमानं तथा ।
सत्वरं सिद्धिदं सिद्धिपं सत्पतिं स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ॥३॥

समग्र विश्व में अन्तर्यामी के रुप में व्यापक वासुदेव भगवान जगत को पावन करने के लिये जिस तरह हाथियों को चंचलतापूर्वक इधर उधर दौडायां जाता है उसी तरह भगवान स्वामिनारायण अपने भक्तों को त्वरित सर्व सिद्धि को प्रदान करते हैं। क्योंकि वे ही सर्वसिद्धि के अधिपति हैं

। सत्पुरुषों के अधिपति हैं । ऐसे साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं । उन परमात्मा का हे मनुष्य तुम भजन करो ।।३।।

देवदेवेशं दयासागरं नागरं श्रीहरं श्रीहरं नीलकंठाभिधम् ।
धर्मवंश्यावनं धर्मरक्षाभवं स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ।।४।।

देवताओं के देव ऐसे महादेवजी ईश्वर हैं । जीवों पर दया करने के लिये सागर की तरह दयालु हैं । समग्र विश्व में सबसे अधिक सुख से संपन्न हैं । जीवों को धन-धान्य तथा संपत्ति देकर सुशोभित करने वाले हैं । वही परमात्मा श्री नीलकंठनाम धारण करके वन में विचरण करते हैं । अपने पिता धर्मदेव के वंश की रक्षा करने के लिये तथा भागवत धर्म की रक्षा करने के लिये जिन्होंने अवतार धारण किया है, ऐसे साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण नाम से पृथ्वी पर विचरण करते हैं । उन परमेश्वर का हे मन तूं भजन कर ।।४।।

छुप्पैयावासिनं पद्मसिंहासनं चन्द्रबिम्बाननं कन्दमूलाशनम् ।
तापसं वर्णिनां नैष्ठिकानां गुरूं स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ।।५।।

धर्मभक्ति के पुत्र के रुप में मनुष्य शरीर धारण करके प्रगट परमात्मा श्रीहरि उत्तरप्रदेश के छपैया गाँव में ११ वर्ष तक निवास करके दिव्य कमल के आसन पर विराजमान होकर अपने भक्तों को दर्शन का लाभ देते, उस समय दिव्य मानुषी शरीर में से शांत शीतलचन्द्र किरणों जैसा प्रकाश सर्वत्र व्याप्त हो जाता है । वर्णि के रुप में वनविचरण करते हुए नीलकंठ के रुप में कंद मूल का भक्षण करके देह की रक्षा किये और उग्र तप करने के लिये संसार के सुख का त्याग करके नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करने वाले ऐसे साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं । उन परमात्मा का हे मनुष्य तुम भजन करो ।।५।।

मस्तकेपिंगलां संदधानं जटां मेखलां मौजिकां चांसयुग्मेकटौ ।
चर्मचेणं सदानन्दकन्दमुदां स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ।।६।।

नीलकंठ वर्णी के रुप में वन में विचरण करके कमर में मेखला को धारण करके, मूंज की यज्ञोपवित धारण करके, बगल में मृगचर्म को दबाये हुए, मुखमंडल पर मंदहास करते हुए ऐसे साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं । उन परमात्मा का हे मनुष्य तुम भजन करो ।।६।।

सिंहशार्दुलगौव्यालनागादिभिर्जन्तुभिर्दुर्गमेदुष्टभीकानने ।
पद्यमानं हिमागस्य चानेकशः स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ।।७।।

महाभयानक वन में जहाँ पर भयंकर सिंह, वाघ, चमरी गाय, श्रृंगाल तथा अत्यंत विषैले सर्पवाले घने वन में नंगे पैरों आप विचरण करते हैं । ऐसे साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण इस पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं, उन परमात्मा का हे मनुष्य तुम भजन्न करो ।।७।।

पुष्पहारावलिं दीर्घदोर्दण्डकं वेदवाचं नराकारमण्डस्थितम् ।
कंजशोणाम्बकं मेधनिम्नस्वनं स्वामिनारायणं हे मनस्त्वं भज ।।८।।

आपके कंठ में पुष्पों की माला सुशोभित हो रही है । विशाल भुज दंड से सभी को आप अभय वरदान दे रहे हैं । अपने मुख कमल से अमृतमय वेद वाक्य उच्चरित कर रहे हैं । कजरारी आंखो से अपने भक्तों के ऊपर दया की वर्षा कर रहे हैं, जैसे आषाढ की काली घटा हो इस तरह से आपकी आंखो से दया की वर्षा हो रही है । ऐसे साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं । उन परमात्मा का हे मनुष्य तुम भजन करो ।।८।।

पापहं वर्णिनावासुदेवेन शं स्तोत्रमेतत्कृतं श्रीहरेच्छयाखिलं ।
यः कथेदयः पठेदन्ततः प्रत्यहं मानवः प्राप्नुयान्मंगलं सोऽत्रहि ।।९।।

वर्णिराज ब्रह्मचारी श्री वासुदेवानन्दजी कहते हैं कि जीवन मात्र के तीनो प्रकार के पापों का नाश करन वाला यह स्तोत्र मात्र भगवान स्वामिनारायण की इच्छा मात्र से मैने किया है । जो कोई इस स्तोत्र का पाठ करेगा या सुनेगा उस मनुष्य का सर्वविधमंगल होगा । भगवान श्रीहरि कल्याणरुप आत्यंतिक मोक्ष देकर अपने अक्षरधाम में ले जायेंगे । ऐसे साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं । उन परमात्मा का हे मनुष्य तुम भजन करो ।।९।।

प.पू. महाराजश्री के मुख से समयोचित संप्रदाय के लिये हितकारी अमृतवचन

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (बापूनगर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्री ने ता. १८-६-१७ को अमदावाद मंदिर के भोजनालय के प्रथम मंजिल पर श्री नरनारायणदेव देश के मंदिरो के ट्रस्टी, कोठारी, युवक मंडल के अग्रगण्य हरिभक्त इत्यादि के साथ तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी इत्यादि की उपस्थिती में एक सभा किये । इस सभा में जो अमृतवचन बोले वे वह संप्रदाय के लिये हितकारी होने से सार रुप में लिखा रहा हूं।

प.पू. महाराजश्री - सभा में एजन्टे में कोई छिपी वात नहीं है, हम आप सभी को जानते हैं, आप लोग हमें जानते हैं, आज ही मिले है, ऐसा तो है नही । आप सभी से कुछ कहना था इसके बहाने आप सभी को भगवान का दर्शन हुआ । विदेश में सभी स्थानो पर आपके बेटा-बेटी पहुंच गये हैं । उन सभी के संस्कार बने रहें, भगवान के भजन का सुख मिलता रहे इसके लिये वहां पर मंदिरों की आवश्यकता वढती जा रही है, उसी के लिये मुझे बार-बार जाना पडता है । इसमें दूसरा कोई कारण नहीं है । इस समय विदेश में ९ मंदिरों का कार्य चल रहा है । इस में एक मंदिर का क्षेत्रफळ तो ५०० एकड़ का है । जिसका नाम ''देवस्य'' रखा गया है । जो विदेश में अपने संप्रदाय का उदाहरण बनेगा । विदेश के पैसे हम यहाँ नही लाते, कोई हरि भक्त वहाँ से आकर पाटोत्सवादि कार्य में यजमान बनकर भेंट दे तो उसे मना भी नहीं करते । विदेश में मंदिरों में जहाँ पर आर्थिक स्थिति अच्छी हैं वहाँ से अर्थ लेकर जहाँ कम अर्थ की स्थिति है वहाँ का निर्माणादि कार्य होता रहता है वहाँ के अपने मंदिरों में जो प्रेसिडेन्ट या ट्रस्टी हैं वे ६०% वडताल के तथा ४०% कालुपुर अपने देश के हैं।

यहाँ पर भी अपने ३५ मंदिरों का कार्य प्रारंभ है । जितने भी मंदिर श्री नरनारायणदेव के विभाग में हो रहे हैं, उन सभी का उत्तरदायित्व हम सभी पर बढ गया है । फिर भी इसका हमें गर्व है । कितने मंदिरों का स्वतंत्र ट्रस्ट था, उन सभी को श्री नरनारायणदेव की संस्था के साथ जोड़ दिया गया है । इससे उन सभी मंदिरों की सुरक्षा है । कारण यह कि आप सभी में से भी यह वात जानते हैं कि - जो देवों की संपत्ति को स्व अधीनस्थ किये हैं, उन्हें कई पीढी तक भोगना पडेगा । हुआ भी ऐसा है । दूसरे अन्य २० से जो कार्य न हो सके वह कार्य हमारे साधु कर रहे हैं । एक साधु सात-सात मंदिरो का निर्माण करवा रहे हैं । वह भी देव का ही कहा जायेगा । मुनि स्वामी कहा गये । खडे हो जाइये । कोटा, भाभर, दियोदर इत्यादि मंदिरों का निर्माण कार्य की देखरेख कर रहे हैं । दूसरे लोग करोडो की संस्था खड़ी करते होंगे । परंतु जब पैसा मांगने जाते है तब उनसे आज्ञा पत्र मांगियेगा । नहीं मांगे तो कोठारी की आफिस में फोन कीजिएगा, जिससे यह पता चले कि इसका सम्बन्धनरनारायणदेव से है या नहीं ? यदि वहाँ खबर ही न होतो ऐसा समझ लीजियेगा कि आपकी कमाई का पैसा व्यर्थ में ही नहीं बल्कि स्वामिनारायण ने जो संप्रदाय का संविधान बनाया है उसे जोडने के लिये पैसे का उपयोग हो रहा है । आप का पैसा पसीने की कमाई से

आता है। आपके बेटा-बेटी ५०००/- रुपये मांगते हैं तो कितना विचार करते हैं। यहाँ पर भगवान के नाम पर विना विचार किये दे देते हैं। अब विचार करना यह है कि आपका यह पैसा देव तक पहुंचता है या नहीं ? अन्यत्र कितने लोग लक्ष्मीनारायण या गोपीनाथजी के नाम से पैसे एकत्र करते हैं, लेकिन सत्य क्या है इसकी स्पष्टता आवश्यक है। करोडो रुपये की प्राईवेट संस्था खडी करते हैं और यह कहते हैं कि हम तो पैसे छूते हीं नही। उनकी गाडी देखिये। गाडी के जैसा ड्राईवर अच्छा वेतन देकर रखना पडता है। गाडी पानी से तो चलती नहीं है। पैसा लगता है।

एक भक्त एक त्यागी के पैर में ५०/- रुपये रखा। उसने ५०/- रुपये उसके उपर फेंक दिया, क्यों ? गुरु पैसे नहीं छूते ? उसमे कारण ५०/- रुपये है, क्योंकि करोडो का स्पर्श करने वाला ५०/- रुपेय क्यों स्पर्श करे। यदि ऐसे लोगों को करोडो रुपये दीजिए तो स्पर्श की क्या वात उस भक्त को भेंट रुपमें मूर्ति या हार भी पहनाया जायेगा।

हमारे जैसा कोई सुखी नहीं हो सकता। हम लोग स्वर्ग में रहते हैं। यहाँ पर धाम में। दूसरे लोग जो भगवान बनकर बैठ गये हैं उनके लिये वर्षो तक नाक में या अन्यत्र नली डाली रहती है उसी में हवा लेते है या सूत्र - पुरुष का नवी से त्याग करते हैं। हाथभी नहीं उठा सकते कोई हाथ उठाये तो हाथ उठा पाते हैं अन्यथा नहीं इससे बडा नर्क और क्या हो सकता है। वही भगवान दूसरे के माथे पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते थे, स्वयं के ऊपर क्यों नहीं क्रियान्वयन होता। जिन्हें जो करना हो वह करे, हमें भगवान नहीं बनना है या न्यायाधीश भी नहीं बनना है। परंतु श्री नरनरायणदेव के आश्रितों की श्रद्धा, विश्वास या पैसा अन्यत्र गलत जगह न चला जाय इसके लिये यह वात किये हैं। महाराज की आज्ञा में रहना चाहिए। शिक्षापत्री में महाराज ने जो भी आज्ञा की है उसमें फेरफार नहीं करना चाहिए। नित्य देवदर्शन या नित्य शिक्षापत्री का वांचन करना चाहिए। दान-भेंट के लिये महाराज की आज्ञानुसार देव को छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं करना चाहिए। श्री नरनरायणदेव की पेटी में १००, ५००, २००० चाहे जितने रुपये आवे वे सभी व्यवस्थापक समिति की दृष्टि में रहते हैं। लोगों को लगता है कि महाराजश्री भीतर की मिटींग में अधिक समय देते हैं, बाहर की मीटींग में समय नहीं देते। लेकिन यहां बैठकर के भी आप सभी के धन की रक्षा की वात करते हैं और सोचते हैं। यहाँ आप सभी के रुपयों की एफ.डी. नहीं की जाती, बल्कि उस पैसे का यहाँ के मंदिर से डाईवर्जन करके छोटे मंदिरों या गाँव के मंदिरों की व्यवस्था देखी जाती है। कालुपुर मंदिर से २५ करोड रुपयें दूसरे मंदिरों के लिये दिया गया था।

जिस तरह आचार्य तथा संतो की महत्ता है उसी तरह हरिभक्तों की भी महत्ता है। कोठारी की चिठ्ठी के विना सभा भी नहीं करनी चाहिए। यही आदर्श नीति है। विदेश में एक मंदिर में अपने यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी गये थे वहाँ के प्रमुखने कहा यहाँ सभा करनी हो तो महाराजश्री के आज्ञा की चिठ्ठी होनी चाहिए। स्वामीजी वहाँ से बड़े महाराजश्री को फोन किये यहाँ से बड़े महाराजश्री ने आज्ञापत्र फेक्स किया तभी सभा हो सकी कहने का मतलब आज्ञापालन करने की कितनी चाहना है।

महाराज का एक पत्र कई वर्ष पहले अपने स्वामिनारायण मासिक में छपा था। महाराजने शुकमुनि से वह पत्र लिखवाया था। उसे अभी यहाँ वांचे तो समय लगेगा। जिसमें तिथि, तारीख, समय का उल्लेख किया गया था। इस तिथि, समय तारीख की मर्यादा में कोई मांगने आवे तो ठीक अन्यथा पत्र की मर्यादा पूरी हो गई ऐसा समझकर कोई सेवा करने की आवश्यकता नहीं। यह विचार करने की वात है।

महाराज को ऐसा करने की क्या जरुरत ? महाराज की आज्ञा के विरुद्ध कोई ऐसा विचार हो तभी महाराज को ऐसा लिखना पड़ा होगा । यह हम कोई नही बात नहीं कह रहे हैं । आगे भी ऐसा हुआ था । महाराज को ऐसा था कि हमारे भक्त किसी से ठगे न जांय इसके लिये इस तरह का पत्र लिखवाये थे ।

अपने उत्सव भी जब तक स्थान का आभाव रहता है तब तक भगवान की गोंद में बैठकर उत्सव करते हैं उसका अलौकिक आनंद होता है । अभी घनश्याम महोत्सव सम्पन्न हुआ कितनी मजा आई । इसी तरह छपैया का उत्सव आ रहा है । आगे बैठे में से किसीने महोत्सव का सूचन किया उस समय प.पू. महाराजश्रीने उसी उपलक्ष्य में कहा कि आप लोग हमारे साथ आइये तो ख्याल आये कि चिउड़ा-आलू खाने के लिये मिलेगा और नहीं भी । अपने यहाँ तो नित्य दीवाली है । एक एक तो उत्सव आते हैं । कुमुहूर्ता में भी प्रतिष्ठा किये हैं । सात-आठ हरिभक्त आये और कहे कि आप ऐसा क्यों किये ? मैंने कहा कि भगवान के लिये कहा कुमुहूर्त होता है । यह सब अपने लिये है । भजन-भक्ति में कहा कुमुहूर्त होता है । लोग पूनम को चलकर भगवान का दर्शन करने जाते हैं, मैं तो सामान्य दिन में चलकर दर्शन करने जाता हूं । भगवान तो वही हैं ।

कहने का मतलब यह है कि, गुरुकुल-गौशाला या मंदिर का निमित्त लेकर जिसका देव के साथ कोई मतलब न हो वह दान मांगने आवे तो ऐसे लुटारुंओ से सावधान रहना । अन्यथा आप सभी के पैसे लूट कर ताताधिन्ना करेंगे । ऐसे गुरु के चेले भी गुरुके मरने की राह देखते रहते हैं । गुरु पहले मरें तो खजाना का भोग कर सके । आप को देना ही है तो अपने बेटा-बेटी को दीजियेगा । नये कपड़े खरीदेंगे । खुश होंगे । कभी पानी की ग्लाश वे देंगे । आज की पीठी बड़ी चालाक है । उन्हें दिये नही और अन्यत्र देते रहें तो समय आने पर अपने मस्तक का तिलक चन्दन मिटाकर सत्संग से अलग हो जायेंगे । इस कार्य में भी आप का सहयोग कहा जायेगा । इसकी अपेक्षा अपने परिवार में द्रव्य का सदुपयोग हो वह जरुरी है । घर में भी कोई अच्छा मोबाईल खरीदे लेकिन उसका दुरुपयोग नहो । अन्यथा सोशियल मीडिया, वोटस अप फेसबुक-यु ट्यब या अन्य का भी ९५% दुरुपयोग होता है । प्रातः होते ही गुडमोर्निंग से प्रारंभ करते हैं । कोई मुझे गुडमोर्निंग का मैसेज करता है तो मैं उस नम्बर को ब्लोक कर देता हूँ । किस प्रकार कहाँ पर सोशियल मिडिया का उपयोग करें यह विवेक बुद्धि का काम है ।

दूसरी बात यह कि कुछ भी काम करना हो और हमें आमंत्रण देना हो तो तीन महीने पहले का समय होना आवश्यक है । इससे पहले नहीं । हम न मिलें तो नारायण मुनि स्वामी या जे.के. स्वामी को सूचित की जियेगा । हमें वह समाचार मिल जायेगा । पाटोत्सव में एक तिथि आगे पीछे हो जाय तो देव नाराज नहीं होंगे । हाँ, हमारे विना आपको उत्सव करना हो तो कोई वात नहीं, हमें कोई इतराज नहीं है । बहनों के लिए गादीवालाजी बराबर है, परंतु हम तथा लालजी महाराजश्री इसमें से कोई भी आवे तो कार्यक्रम पूर्ण होजायेगा, सभी का आग्रह मत रखियेगा । छ महीने में या एक वर्ष में एक बार पहुंचा जा सके इससे सत्संग की जागृती बनी रहेगी ।

दुनिया का सर्व प्रथम स्वामिनारायण जन्मभूमि इत्यादि अपने भाग में आया है । दूसरे मंदिरों में अन्य मूर्तियों को प्रतिष्ठित करने के निमित्त से या अन्य किसी निमित्त से महाराज द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियां सम्भवतः चलायमान हुई होंगी लेकिन श्री नरनारायणदेव की मूर्ति चलायमान नहीं हुई, अचल है । इसका हमें गर्व होना चाहिए । महाराज आप सभी को सत्संग में खूब बल प्रदान करें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा के समय उपयोग में लायागया प्रसादी का कुंभ

श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का विश्व में सर्व प्रथम मंदिर श्रीहरि नें अमदावाद में बनवाया तथा उस में अपने ही स्वरुप ऐसे महाप्रतापी श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया । प्रतिष्ठा यज्ञ में वेदऋचाओं के साथ अखंड घी की आहुति भी दी गई । वेदगान के साथ श्री नरनारायणदेव का जयघोष विश्व में व्याप्त हो गया । श्रीहरिने स्वयं यज्ञ में विराजमान होकर प्रतिष्ठा यज्ञविधिको पूर्ण किया ।

उस समय शुभ मुहूर्त में यज्ञयाग के लिए अनेक प्रकार की सामग्री संत-हरिभक्त मिलकर अथक परिश्रम करके एकत्रित किये । मक्खन मथ कर बनाये हुए घी, हाथ से गेहूँ का आंटा पीसा हुआ, हाथ से तैयार किया गया मसाला इत्यादि सभी परिश्रम के कार्य उस समय तैयार किये गये थे । आज के समय में उसकी कल्पना करना बड़ा मुश्किल है । ऐसी सेवा करने के लिये नितांत श्रद्धा की जरुरत है । अशक्य साधनो से महोत्सव करना बड़ा मुश्किल कार्य था परंतु सर्वनियन्ता श्रीहरि की कृपा से थोड़ी सामग्री से भी परिपूर्ण हो जाता है ।

इस प्रतिष्ठा याग में देव के लिये जिस घी का उपयोग किया गया था वह घी जिस में रखा गया था वह घी का घड़ा यहाँ की म्युजियम में दर्शन के लिये रखा गया है । श्रीजी महाराज के स्पर्श मात्र से जो अक्षयपात्र हो गया था । उसी पात्र के घी से प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्ण हुआ था । देव प्रतिष्ठा के समय अन्नकूटोत्सव हुआ, संत-हरिभक्तों को रसोई हुई तथा प्रत्येक कार्यों में यथेष्ट घी का उपयोग किया गया फिर भी महोत्सव के अंत में उस घड़े का घी कम नहीं हुआ ।

इस प्रकार का चमत्कार देखकर हजारो लोग उस समय आश्चर्य चकित हो गये थे । कलिकाल में भी हम सभी को ऐसे अक्षयपात्र का दर्शन हो रहा है, यह हम सभी की बड़ी भाग्य है । श्रीजी के स्पर्श से स्थान, वर्तन, भी अक्षयपात्र हो जाते हैं । तो उसे प्रतिष्ठित किये गये उन्हीं की सन्तान ऐसे आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद देने के लिये अति समर्थ हैं, इस में लेश मात्र शंका का स्थान नहीं है । जिसके-जिसके हाथ पर श्रीजी महाराजने अपना हाथ रखा है वह सभी जड़-चेतन पदार्थ अति दिव्य हैं । इसकी प्रतीति बड़ी सरलता से हो जाती है ।

आज भी संप्रदाय में भजन तथा भोजन की कोई कमी नहीं है आनंद ही आनंद है । जाति-पांति, ऊँच नीच के भेदभाव से रहित सभी को ठाकुरजी का प्रसाद परसाजाता है । इन सभी के मूल में अक्षयपात्र है । इस कलिकाल में घड़ा जितना पानी भी दुर्लभ है, जबकि श्रीजी ने तो घी को पानी की तरह बहाया है । इस की महिमा समझना एवं विचारना चाहिए ।

इन अक्षयपात्रों का हृदय धारण करके ठाकुरजी की रसोई बनाकर उनका भोग लगाने के पवित्र विचार से हृदय में वह पवित्रता बनी रहेगी इससे श्रीजी की अखंड स्मृति रहेगी ।

– प्रो. हितेन्द्रभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-अगस्त-१७

रु। ११,०००/-	निर्मलाबहन दिनकरराय महेता - न्युजर्सी - अमेरिका।
रु। १०,०००/-	गिरीशभाई साकलचंदभाई पटेल उनके पुत्र को वीझा मिला उस निमित्त - न्यु राणीप - अमदावाद
रु। ५,१००/-	अ.नि. दिप्तीबहन नवीनभाई पटेल पुण्यतिथि के निमित्त - कृते गोरधनभाई।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि - अगस्त-१७

ता. २-०८-२०१७	श्री परेशभाई रमणलाल पटेल - कुंडाल वर्तमान में अमदावाद
ता. ४-०८-२०१७	अ.नि. जसुबा जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट कृते मानसी, प्रीत, स्वत्स, नारणपुरा।
ता. ६-०८-२०१७	श्री कोकलभाई मणीलाल पटेल - वडुवाला वर्तमान में महादेवनगर।
ता. १५-०८-२०१७	अ.नि. दीप्तीबहन नवीनभाई पटेल की पुण्यतिथि के निमित्त - डॉ. गोरधनभाई नारणभाई पटेल - माणसावाला।
ता. १९-०८-२०१७	सां.यो. कंकुबा तथा सां.यो. काशीबा श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर (हवेली)
ता. २०-०८-२०१७	श्री स्वामिनारायण म्युजियम आयोजित समूह महापूजा - कृते चंदुभाई सोमैया तथा प्रवेशभाई सोनी।
ता. २५-०८-२०१७	श्री स्वामिनारायण म्युजियम आयोजित समूह गणपति महापूजा, कृते धर्मेन्द्रभाई कानजीभाई पटेल - घाटलोडीया।

धन तेरस ता. १७-१०-२०१७ मंगलवार

प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद हाथों से लक्ष्मीपूजन संपन्न होगा।

पांच, दश ग्राम का प्रसादी का सिक्का म्युजियम में से मिलेगा।

काली चौदश ता. १८-१०-२०१७ बुधवार

प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से म्युजियम में प्रतिष्ठित प्रसादी के श्री हनुमानजी का विशेष पूजन ता. १८-१०-१७ बुधवार को प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक संपन्न होगा।

रु। ११००/- भरकर दम्पती पूजन में बैठ सकते हैं

संपर्क : श्री स्वामिनारायण म्युजियम : ०७९-२७४८९५९७ • दासभाई : ९९२५०४२६८६

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

धन्य तुलजाराम भक्त

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

भगवान अपने भक्तों की कसौटी करने के लिये बोले कि बोलो इनमें से कितने लोग साधु बनना चाहते हैं ? बात है जेतलपुर में अक्षर महोल के ऊपर जब सभा में महाराज विराजमान थे । उस सभा में महाराजने सभी से प्रश्न किया कि इतने दिनों से आपलोग यहाँ बैठे हैं, बहुत उत्तम सेवा भी किये तो अब आप लोग बताइये कि इसमें से कितने लोग साधु होना चाहते हैं । महाराज तो सभा में कहे लेकिन परंतु समाज में सभी बहादुर नहीं होते । जितने जंगल हैं उन सभी में चन्दन नहीं होता । बहादुरी से लडने के लिये जिस तरह शौर्य की आवश्यकता होती है, उसी तरह साधु होने के लिये आभ्यंतर शौर्य की आवश्यकता होती है । बोलने वाले तो सभी होते हैं, जब आचरण करने की वात आती है तब खबर पड जाती है । कितने लोग बोलते रहते हैं हम शबक सिखा देंगे । हमारे गाँव में कोई पैर रखकरके देखे तो ? जब पैर रखने वाला पैर रख देता है तब कहने वाला चुपचाप छिप जाता है ? सही समय पर जो शौर्य प्रदर्शित करे उसी को यथार्थता कहेंगे ।

महाराजने साधु बनने की वात की तो सभा में से दो व्यक्ति खड़े हुये जिससे तुलजाराम तथा गोरधनदास थे । श्रीजी महाराज दोनो के सामने देखकर कहते हैं कि ''क्या घर में सभी से पूछ कर आये हो ?'' महाराज ? पूछने की क्या जरुरत विना समय बिगाडे साधु बना दीजिये । श्रीजी महाराजने कहा कि, आप तैयार है, आपकी निष्ठा अच्छी है । आपकी शूरवीरता देखकर हम बहुत प्रसन्न हैं । देखिये भक्तों ? एक वात बहुत अच्छी है । सावधान होकर सुनिये । गृहस्थाश्रम में रहकर जो मेरी आज्ञा का पालन करते हैं हुए मेरी भजन करता है उसके हृदय में मेरा निवास होता है । जिसके हृदय में धर्म, भक्ति नहो उसके हृदय में मेरा वास नहीं होता । इस लिये हे भक्तों ? साधु बनने की अपेक्षा सीधा होना आवश्यक है ।

यह वात आज भी याद रखने लायक है । साधु बनने की अपेक्षा सीधा वनना बड़ा कठिन है । साधु बनने की अपेक्षा आप सीधे बनें अर्थात्, अपने हृदय में धर्म के साथ भक्ति का आचरण करें तभी आपके हृदय में भगवान का वास होगा । तभी हम आपको साधु मानेंगे ।

इन दोनों भक्तों में तुलजारामभाई प्रांतिज में व्यापार करते थे । कोई सामान्य नहीं थे । सुखी संपन्न थे । महाराज ! मैं साधु होना चाहता हूँ । आप भले सभी को भजन करने की वात किये लेकिन हम तो आपके पास साधु होना चाहते हैं । उसी समय गोरधनभाई खड़े होकर कहने लगे कि महाराज मैं भी तैयार हूँ । श्रीजी महाराज कहते हैं कि तूं बैठजा तुम्हारा काम नहीं है । तूं बाहर से ठीक लेकिन भीतर से ढीला है । अभी तुम्हें तप करने की जरुरत है । लेकिन तुलजाराम की स्पष्टता अभी करते हैं ।

सोमलाखाचर काठी दरबार थे । उनके पास तलवार थी । महाराज उन्हें अपने साथ लेलिये । तुलजाराम से कहे कि इधर आवो । तुलजाराम वहाँ गये । जेतलपुर में तालाब के पास महल के भीतर तुलजाराम को ले गये । श्रीजी महाराजने पूछा कि तुलजाराम तूं कौन है ? उसने कहा, मैं किसी का पुत्र नहीं हूँ । मैं किसी का सम्बन्धी नहीं हूँ । किसी के साथ हमारी समता या विसमता नहीं है । मैं बालक भी नहीं था और युवान भी

नहीं हूं। वृद्ध भी नहीं हूँ। मेरा कोई देश नहीं है, गाँव नहीं है, मेरी कोई जाति भी नहीं।

''सच्चिदानंद रुपोऽस्मि'' हूँ । सत् चित्-आनंद स्वरुप मैं हूं। आपका दास हूँ।

श्रीजी महाराज ने कहा कि ओ...हो....हो.... यह तो बड़ा ज्ञानी हो गया। साधु बनने में अभी समय है फिर भी ज्ञानी बन गया है। सोमलाखाचर अपनी तलवार लाओ तो तूं आत्मारुप है, अभी पता चल जायेगा। तुझे डर नहीं है । सम नहीं है विषम नहीं है । ऐसे कहते हुए श्रीजी महाराज अपने हाथ में तलवार लिये । सावधान ? यह तलवार तुम्हारे मस्तक पर गिरेगी तो तूं क्यां बोलेगा खबर है ? नही, महाराज ? नहीं, महाराज ? कुछ नहीं बोलूंगा। अभी तेरे माथे पर इस तलवरा से प्रहार करुँ तो तूं चिल्लाने लगेगा। ऐसा कह कर महाराज तलवार ऊपर किये । वह तुलजाराम भगत महाराज के सामने झुंका हुआ खड़ा रहा। कहने लगा किं मैं बड़ा भाग्यशाली हूं, आप प्रहार कीजिए । यह मुहूर्त अच्छा है । क्यों मुहूर्त अच्छा है ? तुलजारामने कहा कि इस चर्मचक्षु से आपका अखंड स्वरुप दिखाई दे रहा है। हंसते हंसते कहने लगा। इससे द्रवित होकर महाराज तलवार को जमीन पर फेंककर उसे अपने गले लगा लिये। महाराजने कहा कि तूं सच्चाशूरवीर है। भगवान तभी किसी को गले लगाते हैं जो अपने मस्तक को महाराज के चरण में रखकर समर्पित हो जाय।

भगवान तुलजाराम के ऊपर प्रसन्न हो गये । तुम धन्य हो, तुम्हारी समझ अच्छी है। हम जानते हैं कि तुम मन से तैयार होकर आये थे। तुम्हें कोई भय नहीं थी। महाराज तुलजाराम का हाथ पकड़कर कहे कि आज मैं जो कहने जा रहा हूँ उसे आप लोग सुनिये - तुलजाराम प्रांतीज के शाह हैं, इन्हें साधु समझना संसारी नही समझना।

प्रिय मित्रो ! संसार में रहना खराब नहीं है, लेकिन संसार अपने भीतर न रहे इसका ध्यान रखना चाहिए। भगवानने जो धर्म-नियम बताये हैं उसी में रहकर भजन-भक्ति करना। इससे हृदय में मेरा सदा वास रहेगा। तुलजाराम जैसे भक्तों को लाख लाख वंदन।

●

सत्संग का गौरव

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

रामायण की कथा का एक प्रेरणादायी प्रसंग है। रावण सीताजीका छल से हरण कर लिया सीताजी के वियोग से प्रभु राम बहुत विचलित हो गये थे परिणाम स्वरुप लक्ष्मण के साथ सीता का अन्वेषण करने लगे। आगे जाते समय उन्हे जटाउ के द्वारा यह समाचार मिला कि रावण सीताजी का अपहरण करके आकाशमार्ग से लंका की तरफ ले गया है। प्रभु श्रीराम लक्ष्मण के साथ उसी दिशा में आगे बढने लगे। वहीं पर उनकी मुलाकात हनुमानजी के साथ हो गई।

बाली का बधकरके सुग्रीव का राज्याभिषेक किया गया। समाचार के अनुसार रावण सीताजीको लंका में उठा ले गया है । प्रभु श्रीराम, लक्ष्मण, सुग्रीव, जांबवान, तथा अन्य वानर सेना सागर के दक्षिण तट पर जाकर डेरा डाल दिया । सभी उस पार जाने की उपाय सोचने लगे। सर्व प्रथम वाली पुत्र अंगदने कहा कि यदि मैं प्रयत्न करुं तो समुद्र पार कर सकता हूँ, आ नहीं सकता। कोई कहता कि मैं बीस या पचीस कदम जितना कूद सकता हूँ। इस तरह की चर्चा चल रही थी लेकिन हुमानजी मौन बैठे थे। मौन मुद्रा में हनुमानजी को बैठा देखकर जांबवान ने कहा कि हनुमान आप मौन बैठे हो आप में ऐसी सामर्थ्य है कि बाल्यावस्था में ही सूर्यलोक तक जाकर सूर्य को लील गये थे। आपके लिये समुद्र पार करना सामान्य बात है। यह सुनकर हनुमानजी के भीतर की सुषुप्त शक्ति जागृत हो गई और हनुमानजी महाराज ''जयश्री राम'' कहकर जब कूदे तो समुद्र के

पार लंका पहुंच गये । लंका में कितने राक्षसों का बधकिये । सीतामाता का समाचार लेकर लंका को जलाकर प्रभु राम के पास आकर वंदन किये ।

हनुमानजी में बल तो था ही लेकिन स्वयं के भीतर की शक्ति का विस्मरण हो गया था । जाम्बवान उसका स्मरण करवाये जिससे उनकी शक्ति जागृत हो गई । परिणाम स्वरुप हनुमानजी अलौकिक कार्य कर सके ।

श्रीमद् भागवत दशमस्कन्धमें प्रलम्बासुर कथा के विषय में जब प्रलम्बासुर से बलदेवजी घबड़ा गये तब श्रीकृष्ण प्रभुने आकाशवाणी द्वारा बड़े भाई बलरामजी की शक्ति का परिचय करवाया । स्वयं की शक्ति का स्मरण होते ही स्वयं की मुष्टि के एक प्रहार मात्र से प्रलम्बासुर का बधकर दिये . वचनामृत में भगवान स्वामिनारायण भी इस प्रसंग का उल्लेख करते हुए कहा कि शक्ति को जागृत करने के लिये शब्द की जरुरत पडती है । इस लेख को वांचने से प्रेरणादाई शब्द मिल सकते हैं । हम सभी लोग बड़े भाग्यशाली है कि संत समागम सत्संग, सत्शास्त्र, कथा-पारायण द्वारा हम सभी को शक्तिदायक-प्रेरणादायक शब्दों की प्राप्ति स्वत: होती रहती है । कथा या प्रसंग हमें यह याद दिला ते है किं आप कौन हैं ? आप किसके भक्त हैं ? आप किस की शरण में हैं ? यदि आप इन प्रश्नों का विचार करके कथा-वार्ता-सत्संग करेंगे तो कभी भी किसी समय रुठने का अवसर नहीं आयेगा । मैं कौन हूँ ? इसका गौरव रखकर भजन-भक्ति सत्संग सेवा करते रहेंगे तो अपने जीव का कल्याण हो जायेगा ।

नाथद्वारा मंदिर पाटोत्सव कार्तिक शुक्ल-७

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अपने नाथद्वारा (राज.) श्री स्वामिनारायण मंदिर का वार्षिक पाटोत्सव कार्तिक शुक्ल-७ (सातम) को सम्पन्न किया जायेगा । इसकी सभी हरिभक्तों को जानकारी हो ।

दीपोत्सव कार्यक्रम

आश्विन शुक्ल-१० शनिवार ता. ३०-०९-१७ को पुष्य नक्षत्र होने से हिसाब लिखने के रजिस्टर खरीदने का मुहूर्त अच्छा है ।

धनतरेस : आश्विन कृष्ण-१३ मंगलवार ता. १७-१०-२०१७ महालक्ष्मी पूजन समय प्रात: १२-३० से २-०० तक, ३-२३ से ४-५२ तक, सायंकाल ७-४५ से ९-१८ तक, रात्रि में २२-५१ से २७-३० तक ।

काली चौदश : आश्विन कृष्ण-१४ बुधवार ता. १८-१०-२०१७ हनुमानजी महाराज का पूजन सायंकाल ७-०० बजे ।

दीपावली : आश्विन कृष्ण-३० गुरुवार ता. १९-१०-२०१७ समूह शारदापूजन-चोपडा पूजन सायंकाल ७-०० बजे अमदावाद कालुपुर मंदिर के सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों विधिवत संपन्न किया जायेगा ।

नूतन वर्ष सं. २०७४ : कार्तिक शुक्ल-१ शुक्रवार ता. २०-१०-२०१७ ।

मंगला आरती प्रात: ५-०० बजे ।
शृंगार आरती प्रात: ६-३० बजे ।
गोवर्धन पूजा प्रात: ८-०० बजे ।
अन्नकूट रचना (दर्शन बंद) प्रात: ९-१५ से १२-०० बजे तक ।
राजभोग आरती प्रात: १२-०० बजे ।
अन्नकूट दर्शन दोपहर १२-०० बजे से ३-३० बजे तक ।

श्रीहरि के ६ठ्ठे, ७ वें तथा ८ वें वंशज के हाथों से संपन्न होगा । नूतन वर्ष को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कालुपुर मंदिर में अपनी आफिस में सभी को दर्शन देंगे ।

सूचना : समूह शारदा पूजन में लाभ लेने वाले भक्त अपनी बही लाल कलर में कपड़े में पता-फोन-मोबाईल नंबर लिखकर मंदिर की आफिस में ४००/- रुपये भरकर रसीद प्राप्त करलें ।

(श्री कमलेशभाई गोर)

श्री स्वामिनारायण

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "जो कामनायें तथा इच्छायें है उसी के अन्दर ज्ञान का प्रकाश छिपा हुआ है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

एक सिद्ध महात्मा थे । उन्हें घोड़ा से बहुत प्रेम था । उस देश के जो राजा थे उन्होंने महात्मा से कहा कि आप गड्डा करके दश दिन तक समाधिमें बैठिये तो हम आपको सब से श्रेष्ठ घोड़ा देंगे । जब दश दिन पूरा हो गया तो महात्माने कहा कि अब हमारा घोड़ा दे दीजिए ।

कहने का मतलब यह कि सिद्ध महात्मा होते हुए भी उनके मन में घोडे के लिए कामना थी । इसी तरह हमारे जीवन का नेतृत्व कौन कर रहा है ? तो आशा, अपेक्षा, आकांक्षा, इन्ही के वश होकर मनुष्य दौड़ता रहता है । इन्हीं के भीतर ज्ञान का प्रकाश छिपा हुआ है । यदि ए अपेक्षायें पूर्ण न हों तो क्या होगा ? तो भगवान की प्राप्ति बाधित हो जायेगी । कुछ लोग ऐसे होते हैं कि भगवान को छोड़ कर अन्यत्र श्रम करने लगते हैं । दूसरी वात यह भी है कि अपनी कामनाओं को प्राप्त करने के लिये परीश्रम करते हैं । भगवान की प्राप्ति के लिये परीश्रम कम करते हैं । भगवान की प्राप्ति के लिये जितनी दौड़करनी चाहिए उनती नहीं कर पाते, इस लिये इसमें प्रारब्धको भी कारण मानना चाहिए और सतत प्रयत्न शील भी रहना चाहिए ।

हम जब कोई कामना या इच्छा करते हैं तो पूजा पाठ अधिक करना पडता है । तभी भगवान में प्रीति बढती है । जिस में जिसकी प्रीति होती है उसी का वारंवार विचार आता है । संयोगवश किसी की इच्छा कामना अधूरी रहजाय तो घबडाने की कोई जरुरत नहीं है । प्रत्येक परिस्थिति अपने अनुकूल हो यह सम्भव नहीं है । स्वयं को परिस्थिति के अनुकूल कर लेना चाहिए । यदि कार्य में लाभ नहीं हो रहा है तो उसके लिये प्रयत्न करना चाहिए । जैसे कोई पर्वत पर चढे तो सरलता भी मिल सकती है, कठिनाई भी आ सकती है, अत: उस स्थिति को स्वयं समझना पडेगा और प्रयत्नशील रहना पडेगा ? सभी कार्य सरलता से १००% पूर्ण होते नहीं है, यदि मानवकार्य करते रहना चाहिए । किसी कार्य से भयभीत नहीं होना चाहिए बाधा अवश्य आयेंगी लेकिन प्रयत्न करने पर सभी रास्ते खुल जायेंगे । निर्बल होकर काम नहीं करना चाहिए, निर्वलता को केन्द्रबिन्दु नहीं बनाना चाहिए । यदि निर्वलता तो केन्द्रबिन्दु बनायेंगे तो असंतुष्ट रहने का अवसर आयेगा,ा इससे अपनी शक्ति का एहशास होगा । किसी में अधिक अपेक्षा भी नहीं रखनी चाहिए । अपेक्षा दु:ख की जननी है । ९९% अपेक्षा दु:ख देकर जाती है । अपेक्षा क्या है तो अपेक्षा अपनी कल्पना है । जैसे वे हमें बुलायेंगे, हमें मान संमान देंगे, इस तरह पूछेंगे । यदि सब अपेक्षा पूर्ण नहीं होती है तो दु:खी हो जाते हैं । परंतु सामन वाले व्यक्ति को क्या खबर कि हमारे अंदर क्या चल रहा है । अब सामने वाले को आपकी अपेक्षा का ख्याल नहीं है तो १००% वह अपेक्षापूर्ण नहीं होगी । इसकी अपेक्षा किसी प्रकार की किसी से अपेक्षा ही न रखी जाय । यदि अचानक चाहे विचार के अनुसार आपकी अपेक्षापूर्ण हो जाय तो इसे सरप्राइज समझना चाहिए । जिस तरह सुवर्णकार सोने को जितना जलाता है उतना उसमें अधिक चमक आथी है, इसी तरह मनुष्य के भीतर जब आत्म शक्ति आती है, विवेक, ज्ञान, बुद्धि का संचार होता है तब सहनशीलता की वृद्धि होती है जिससे उसके विचारों में राहत मिलने लगती है । गीता में ज्ञानयोग की अपेक्षा कर्मयोग अधिकश्रेष्ठ बताया गया है । अंतुर्मुखी लोग ज्ञानयोग वाले होते हैं । मनन चिन्तन भी कर्म है । ज्ञानी और अज्ञानी में क्या फर्क है तो ज्ञानी धर्म को केन्द्रबिन्दु बनाने का विचार करता है, क्योंकि धर्म का दूसरा नाम सुख है । अधर्म से दु:ख की उत्पत्ति तुरंत होती है । शांति से सोने नहीं देता, बैठने नहीं देता, खाने नहीं देता यही सबसे बड़ा दु:ख है । हम

शांति से सो सकें, अच्छी नींद आ सके यही सबसे बड़ा सुख है । इस लिये धर्म के साथ भक्ति करना, भगवान में श्रद्धा रखना यही जीवन का उद्देश्य होना चाहिए । हमें साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण मिले हैं वे अपने प्रारब्धको भी बदल सकते हैं । जिस तरह छोटे बालक को स्कूल जाने के लिये चाकलेट की लालच देते हैं और वह जाने लगता है और उसे घर की भी याद नहीं आती । इसी तरह सच्चे मन से भगवान की भजन-भक्ति करने से भगवान की अनुभूति होने लगेगी और एक समय ऐसा आयेगा कि सब कुछ अपने आप छूट जायेगा ।

●

पाप

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

इस संसार में कोई ऐसा नहीं होगा जो पाप नहीं किया हो । सभी पाप करते हैं ? पाप अनपढ ही करते हैं ऐसा नहीं है । पढे हुए भी करते हैं । पाप गरीब भी करते हैं, धनी भी करते हैं । कथा करने वाले करते हैं कथा सुनने वाले भी करते हैं । मनुष्य मात्र पाप करता है । पाप हो यह बड़ा अपराधनहीं है । लेकिन पाप करके उसे कबूल करले, किये पाप पर पश्चाताप हो तो पाप कट जाता है अन्यथा कबूल न करने पर पाप बढता रहता है ।

मानव का जन्म पाप छोडने के लिये हुआ है । एक मात्र मनुष्य को भगवान ने बुद्धि दी है कि मनुष्य चाहे तो पाप छोड़ सकता है । पशु पक्षी पाप करते हैं, लेकिन वे अज्ञानी होते हैं । अपना भारत देश पवित्र देश है । यह ऋषिमुनियों का देश है । हम सभी ऋषिमुनियों की संतान हैं । कितने लोग ऐसा समझते हैं कि जो ब्राह्मण हैं वे ही ऋषि मुनियों की संतान हैं । लेकिन अपने शास्त्रों में लिखा है कि भारत ऋषि मुनियों का देश है । भारत स्वर्ग से भी अधिक श्रेष्ठ है । प्रत्येक भारत वासी ऋषि की संतान है । ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ए सभी ऋषि की संतान है । भारत की कोई ऐसी जाति नहीं है जिसमें संत न हुये हों । भारत ऋषियों मुनियों की धरती है । हम सभी भगवान की संतान है । हम सभी भगवान के प्यारे भक्त हैं । अपने हाथ से जो भी पाप हुआ है उसका परमात्मा नाश कर देते हैं । पाप करने से सुख नहीं मिलता ।

अपनी बुद्धि को तथा मन को समझना चाहिए कि पाप कभी छिपता नहीं है । पाप तथा पात्र बाहर आजाता है । आज नहीं तो वर्ष-दो वर्ष में पाप प्रगट होगा । प्रकाशित हो जायेगा । कोई ऐसा सोचता है कि मैं दरवाजा बन्द करके पाप कर रहा हूं, मेरा पाप कोई देखने वाला नहीं है, लेकिन आप के भीतर भगवान तो बैठे हैं वे तो देख रहे हैं । आपकी सारी क्रियाओं पर भगवान की नजर रहती है । सजा देने वाले तो परमात्मा हैं । मन से पाप करने वाले को भी परात्मा सजा देते हैं । शरीर से पाप करने वाले को ही सजा मिलती है ऐसा नहीं है, जो मन से पाप करते हैं उन्हें भी सजा मिलती है । मन से पाप करने वाले की खबर जगत को भले न मिले, लेकिन परमात्मा को तो मिलती है । मनुष्य अपने जीव नमें अनेक पाप करता है । परंतु किये हुए पाप की भूल को स्वीकार नहीं करता । यही उसकी कमजोरी है । जो अच्छा काम करे वह उसका जो खराब काम करे वह दूसेर का । इस तरह अपने माथे का पाप दूसरे के माथे पर ढकेल देता है । लेकिन अपने से कोई पाप हो गया हो तो प्रायश्चित करना चाहिए । पश्चाताप करना चाहिए । पाप का प्रायश्चित ही समाधान है ।

कवि कलापी अपनी कविता में लिखते हैं कि –

''हा पस्तावो विपुल झरणुं स्वर्गमांथी उतर्यु छे,
पापी तेमां डुबकी दईने पुण्यशाली बने छे ॥''

यथार्थ पाप को धोने के लिये पश्चाताप अजोड साधन है । पश्चाताप होने पर पुनः पाप नहीं होता । प्रायश्चित्त से पाप धुल जाता है । मनुष्य के जीवन में पुण्य का कृष्णार्पण हो सकता है, परंतु किये गये पाप का कृष्णार्पण नहीं हो सकता । परमात्मा हमें मनुष्य का जन्म दिया है – इसलिये परमात्मा का स्मरण करते हुए दृढ निश्चय करना कि अब हमें पाप नहीं करना है ।

अपने शास्त्रों में सबसे बड़ा पुण्य क्या है ? बिल्कुल पाप न करना ? गरीबों को भोजन कराना – मंदिरो में पूजा करना यह तो ठीक है, लेकिन यह साधारण पुण्य है । सब से बड़ा पुण्य यह है कि पाप से दूर रहना । पाप दो प्रकार का होता है – एस तो पैसे के लिये पाप होता हैं । दूसरे क्षुद्र जीवों के लिये

पाप करते हैं। क्षुद्र जीव काम सुख का उपभोग करने के लिये पाप करते हैं। काम ही ईश्वर से विमुख करता है। काम शब्द का अर्थ समझिये - क शब्द का अर्थ है सुख, आम शब्द का अर्थ है कच्चा । कच्चा सुख अर्थात् काम । सच्चा सुख परमात्मा है।

पाप-पुण्य की बहुत सारी व्याख्या शास्त्र में की गई हैं। सबसे बड़ा पाप हिंसा है। अज्ञानता में भी किसी जीव की हिंसा नहीं करनी चाहिए । भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री के ११ वें श्लोक में सभी सत्संगी मात्र के लिये आज्ञा किये हैं कि किसी प्राणी की हिंसा नहीं करना। प्रत्येक प्राणी में परमात्मा का वास है, इस भाव से सभी को देखने से हिंसा नहीं होगी तो पाप के भागी नहीं होंगे। शास्त्र तो ऐसा भी करते हैं कि किसी जीव की हिंसा परमात्मा की हिंसा है।

अपने ऋषिमुनि कहते हैं कि उनके आश्रम में वाघ-सिंह बैठे हों और वहाँ पशु पक्षी भी होते हैं वे सभी अपना वैर का भाव भूलकर एक साथ रहते हैं। जीव मात्र की शरीर अलग अलग है लेकिन सभी में परमात्मा का वास तो है ही। किसी को खराब शब्द बोलना भी हिंसा है। किसी के लिये खराब विचार करना भी मानसिक हिंसा है।

सभी शरीर में ईश्वर एक ही हैं, अलग नहीं हैं। आज से ही आप सभी दृढ निश्चय करें कि इस जगत में हमारा कोई शत्रु नहीं है। हमारा कोई कुछ बिगाडा नहीं है, जो भी कुछ बिगडा है वह हमारे पाप का फल है। इसलिये किसी के लिये खराब विचार नहीं करना। जिसके हृदय में परमात्मा नहीं है उसके हृदय में पाप के सिवाय कुछ भी नहीं है। जहाँ पाप होता है वहाँ संताप होता है। पाप तथा रोग पेट में जाने पर फैलने लगता है। इसलिये पाप से बचो।

●

पूर्ण विश्वास

- लाभुबहन मनुबाई पटेल (कुंडाल - ता. कडी)

खोखरा गाँव के हीरजीभाई परम एकांतिक भक्त थे। महिमा के साथ प्रभु की भजन करते रहते थे। जिसके हृदय में परमात्मा के दिव्य भक्ति का प्रकाश होता है उसके हृदय में सदा आनंद ही रहता है। इसके लिये अनन्य भाव से भगवान की भजन करनी चाहिये।

एक समय हीरजीभाई बैलगाडी लेकर किसी कार्य के लिये बजार गये। व्यावहारिक कार्य पूरा करके गाँव की तरफ वापस आ रहे थे। सूर्यास्त हो गया। साथ में दश हजार रुपये का आभूषण था। इस समय १० लाख की कीमत का कहा जायेगा। गाडी में बैठकर कीर्तन गाते आ रहे थे।

आवाने आवा आवा ने आवा रे,
रहेजो मारी आंखडली मां प्रभु..... आवाने आवा।
आवाने आवा मारा नाथ बिराजो,
हां रे मारा तनडाना ताप बुझावा रे..... आवाने आवा।

अंधकार चारो तरफ फैल गया, कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। एकाएक लुटारुओं की टोली आ गई, बैल गाडी को घेर लिये। और कहने लगे, कहाँ जा रहे हो ? तुम्हारे पास जो भी है उसे जल्दी दे दो। अन्यथा मारेजाओगे। हीरजीभाई आंख बंद करके स्वामिनारायण भगवान का स्मरण करने लगे। हृदय कांप रहा ता। उसी समय उनका आंख में प्रकाश दिखाई दिया जिस में स्वयं भगवान थे। मेरे भगवान मदद में आ गये। भगवान बैल के साथ गाड़ी को हथेली पर उठाकर टपर गाँव के किनारे रख दिये। भक्तराज चिंता छोड़कर सोजाओ इतना कहकर प्रभु अदृश्य हो गये।

ईधर चोर देखते ही रह गये। गाड़ी कहाँ गई। वह भक्त कहाँ गया। इधर उधर बहुत देखे वह कहीं नहीं दिखाई दिया। हीरजीभाई ने देखा तो वे टपर गाँव के किनारे पहुंच गये हैं। ओहो....हो.....हो... धन्य हैं प्रभु आप ? आपकी दया की कोई सीमा नहीं है।

प्रभु का ध्यान करते करते गाड़ी में सो गये। बैल को वृक्ष में बांधदिये। प्रातः होते वहां से प्रस्थान किये। खोखरा गाँव आया। गांव वालों से आपवीती सभी वात कही। गाँव के लोगों को प्रभु की महिमा समझ में आगई। वे सभी सत्संगी हो गये। वर्तमान काल में भी प्रभु रक्षा करते हैं। मात्र भगवान के ऊपर पूर्व श्रद्धा होनी चाहिये।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद कालुपुर मंदिरमें जन्माष्टमी उत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा कालुपुर मंदिर के स.गु. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन से सम्प्रदाय के सर्व प्रथम महामंदिर कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में श्रावण कृष्ण-८ कृष्ण जन्माष्टमी का परम पवित्र उत्सव मंदिर के प्रसादी के विशाल चौक में भव्य सुशोभित सामियाना में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में रात्रि ९ बजे से १२ बजे तक भव्य कीर्तन-रास-गर्बा किया गया था। संत मंडल तथा लोकप्रसिद्ध गायक श्री पूरव पटेल तथा उनकी टीमने नंद संतो के अलौकिक कीर्तन गाकर सभी को आनंदित किया था। रात्रि में १२ बजे ठाकुरजी के पुजारी तथा संतोने श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की आरती उतारी थी। श्रीकृष्ण जन्मोत्सव का दर्शन करने के लिये शहर के हजारो हरिभक्त दर्शन करके कृतार्थ हुये और पंजीरी का प्रसाद प्राप्त करके धन्य हो गये। समग्र आयोजन को.जे.के. स्वामी, भंडारी जे.पी. स्वामी, भक्ति स्वामी इत्यादि संत मंडलने किया था। (को. शा. मुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री गणेश चतुर्थी गणेश स्थपना उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी के मार्गदर्शन से भद्रपद शुक्ल-४ श्री गणेश चतुर्थी ता. २५-८-१७ शुक्रवार को प्रातः ९ बजे परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के समक्ष विध्नहर्ता गणेशजी की स्थापना पूजन-आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने के वरद् हाथों से की गई थी। मंदिर के गोर कमलेशभाईने पूजन विधी कराई थी। इसके बाद मंदिर में जहाँ सदा विराजमान रहते हैं वहाँ पर श्री गणेशजी का पूजन-अर्चन तथा अन्नकूट की आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से की गई थी। श्री गणपति महाराजके पुजारी पार्षद बाबु भगत तथा महादेव भगत दादा को अलौकिक ढंग से अलंकृत किया था। सभी हरिभक्तों को गुण से बने चूर्मा का लड्डू प्रसाद में दिया गया था। (निरव भावसार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में जलझीलणी एकादशी को श्री गणपतिजी को शोभायात्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी के मार्गदर्शन से भाद्रपद शुक्ल-११ एकादशी ता. २-९-१७ शनिवार को श्री गणपतिजी की शोभायात्रा धूमधाम से निकाली गई थी। (इसि समय समग्र धर्मकुल धर्म प्रवास में विदेश गया होने से) मंदिर में पू. महंत स्वामीने श्री गणपतिदेव की आरती करके श्री नरनारायणदेव उत्सवी मंडल तथा कालुपुर मंदिर के गोर महाराज एवं हजारो हरिभक्तों के साथ संत मंडल उत्सव करते हुए नारायणघाट पधारा था। जहाँ पर पवित्र साबरमती में जल क्रीडा कराकर मंदिर में धूमधाम के साथ उत्सव किया गया और श्री गणपतिजी की आरती उतारी गई। वहाँ के महंत स्वामी स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामीतथा अन्य सभी मिलकर भजन किया था।

सायंकाल वापस आकर कालुपुर मंदिर में उत्सव मंडलने उत्सव किया। समग्र आयोजन हरिचरण स्वामी, जे.के. स्वामी, शा. मुनि स्वामी, योगी स्वामी इत्यादि संत मंडलने उत्सव को चरितार्थ किया था।

(शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध् यमें अ.नि.स.गु. स्वा. भगवतचरणदासजी (जूनागढ) के स्मरणार्थ अखंड धुन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कालुपुर मंदिर के भव्य सभा मंडप में ता. २५-८-१७ प्रातः ८-३० से १०-१० तक अ.नि. स्वामी भगवतचरणदाजी के निमित्त उनके शिष्य मंडल तथा जूनागढ मंदिर के संतो तथा कालुपुर मंदिर के संत-हरिभक्तों द्वारा श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धून की गई थी। बाद में स्वामीजी के शिष्य मंडलने तथा जूनागढ मंदिर के संतोने प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारी थी। प.पू. आचार्य महाराजश्रीने भी ऐसे धर्म पारायण देव के प्रति निष्ठा रखने वाले संत को श्रद्धांजलि

अर्पण करके उनके शिष्य मंडल को आशीर्वाद दिये थे। बाद में ठाकुरजी का प्रसाद सभी भोजन में दिया गया था।

(शा. नारायणमुनि स्वामी)

डीसा (बनासकांठा) पवित्र श्रावण मास में श्रीमद् भागवत पच्चाहन पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा कालुपुर मंदिर के . महंत स्वामी की प्रेरणा से डीसा गाँव के समस्त हरिभक्तोंने सुंदर भागवत कथा पारायण का आयोजन ता. ९-८-१७ से १३-८-१७ तक स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर किया था।

इस प्रसंग पर ता. १३-८-१७ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । साथ में कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी, गांधीनगर के महंत स्वामी, कांकरिया से वासुदेव स्वामी, सिद्धेश्वर स्वामी तथा भुज से, सिद्धपुर से खाण मंदिर से संत पधारे थे। संतो ने श्रीहरि की महिमा का वर्णन किया था । बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । कथा संचालन का कार्य शा. नारायणमुनि स्वामीने किया था।

(श्री न.ना. युवक मंडल - डीसा)

पवित्र श्रावण मास में श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया रामबाग रात्रीय श्रीमद् भागवत सप्ताह

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा वयोवृद्ध संत स.गु. जानकीवल्लभ स्वामी की प्रेरणा से तथा स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी के मार्गदर्शन से श्रीहरि के दिव्य चरणों से पवित्र प्रसादी के श्री स्वामिनारायण मंदिर रामबाग में ता. ८-८-१७ से ता. १४-८-१७ तक रात्रीय श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण स्वा. वासुदेवचरणदासजी के वक्तापद पर धूमधाम से संपन्न हुई। इस कथा के यजमान अ.नि. प.भ. नारणभाई मोतीभाई के स्मरणार्थ उन्हीं के पुत्र प.भ. गोकुलेशभाई परिवारने लाभ लिया था । श्रोतागण रात्री कथा का श्रवण करके धन्य हो गये। कथा विराम के बाद सभी को अल्पाहार की व्यवस्था की गई थी । समग्र आयोजन में महंत स्वामी के मार्गदर्शन में बापू स्वामी, पुजारी श्रीजी स्वामी, चैतन्य स्वामी इत्यादि संत मंडल तथा महंत स्वामी के आत्मीय भक्त सेवा का लाभ लिये थे।

ता. १३८-१७ रविवार को पवित्र श्रावण मास में मंदिर में विराजमान भोलानाथजी का लघुरुद्र से रुद्राभिषेक किया गया था। अनेक भक्त इसका लाभ लिये थे।

(श्री न.ना. युवक मंडल - कांकरिया)

पवित्र श्रावण मास मेंजेतलपुर धाम में हिडोले का दर्शन तथा कथा और जन्माष्टमी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा प.पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से एवं महंत के.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में पवित्र श्रावण मास में श्रीहरि को अलंकृत झूले में झुलाया गया था । इसके अलांवा द्वादश ज्योतिर्लिंग का दर्शन भी कराया गया था । हजारो हरिभक्त दर्शन करके धन्यता का अनुभव किये थे। श्रावण मास में श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण अनेक भक्तों ने किया था।

श्रावण कृष्ण-८ श्री कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव भव्यता से मनाया गया था । जिस में जेतलपुर का उत्सव मंडल उत्सव करके सभी को प्रसन्न किया था। रात्रि में संतो द्वारा रचित कीर्तन-रास-गर्बा का आयोजन किया गया था। रात्रि में १२-०० बजे श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की आरती धूमधाम से की गई थी। रविवार को बाल सभा का आयोजन किया जाता है। इससे बालकों में संस्कार का सिंचन हो रहा है।

ता. २-९-१७ भाद्रपद शुक्ल-११ जलझीलणी एकादशी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

(कोठारीश्री जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजलि में पवित्र श्रावण मास में हिंडोला दर्शन एवं हरिकृष्ण लीलामृत पंचान्ह कथा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली में आषाढ-श्रावण मास में ठाकुरजी की प्रतिदिन अलंकृत झूले में झुलाया जाता था।

श्रावण मास में स.गु. निष्कुलानंद स्वामी द्वारा रचित श्रीहरि ऐश्वर्य दर्शन की कथा स.गु. भक्तिनंदन स्वामी के वक्तापद पर संपन्न हुई थी।

श्रावण कृष्ण जन्माष्टमी को भव्य भजन-कीर्तन का

आयोजन रात्रि में १२-०० बजे किया गया था । जन्मोत्सव की आरती तथा नंद महोत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

ता. २०-८-१७ को रात्रि में मासिक सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस के यजमान प।भ. ललितभाई ठक्कर परिवार था । आगामी मासिक सत्संग ता. १७-९-१७ रविवार को होगी ।

श्रीकृष्ण लीलामृत कथा : ता. २-८-१७ से ता. ६-८-१७ तक पवित्र श्रावण मास में स.गु. महानुभावनंद स्वामी कृत श्रीहरिकृष्ण लीलामृत ग्रंथ की पंचान्ह कथा भक्तिनंदन स्वामीने की थी । कथा के अन्तर्गत श्री घनश्याम जन्मोत्सव भव्यता के साथ मनाया गया था । इस अवसर पर अनेक स्थानों से संत पधारे थे । कथा की यजमान गं.स्व. पुष्पाबहन गिरीशभाई भगत परिवार था ।

कथा के प्रथम दिन पोथीयात्रा प.भ. सुरेशभाई मोहनभाई ठक्कर के निवास स्थान से अंजली मंदिर तक निकाली गई थी । इस प्रसंग पर श्रीहरि को अलंकृत करके रथ में बैठाया गया था ।

यहाँ के यजमान भक्त पवित्र श्रावण मास में सर्वोपरि बालस्वरुप घनश्याम महाराज की अलौकिक लीला का कथा श्रावण करके धन्य हो गये ।

(महंत स्वामी विश्वप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) समूह महापूजा का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर सेक्टर-२ गांधीनगर में पवित्र श्रावण मास में ता. २०-८-१७ रविवार को महापूजा का आयोजन किया गया था ।

महापूजा के मुख्य यजमान पद का प.भ. गोरधनदास रमछोडदास पटेल परिवार ने लाभ लिया था । २०० जितने भाविक भक्तों ने समूह महापूजा का लाभ लिया ता । महापूजा समापन प्रसंग पर शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने महापूजा की महिमा समझाई थी । समग्र आयोजन में श्री न.ना. युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा सराहनीय थी । (महंत पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा २४ वाँ ज्ञानयज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा नारायणपुरा मंदिर में सर्वोपरि बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज के सानिध्य में पवित्र श्रावण मास में २४ वाँ ज्ञानसत्र ता. १३-८-१७ से ता. २०-८-१७ तक दोनो समय श्रीमद् सत्संगिजीवन की कथा स्वा. श्री हरिॐप्रकाशदासजी के वक्तापद पर तथा प.भ. अजयभाई ठक्करने यजमान पद पर धूमधाम से हुई ।

ता. १२-८-१७ को यजमानश्री के निवास स्थान से पोथीयात्रा निकाली गई थी । बाद में नारायणपुरा मंदिर तक धूमधाम के साथ पहुँची थी ।

कथा के प्रारंभ में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । यजमान परिवार की बहनों को दर्शन आशीर्वाद देकर कृतार्थ की थी ।

कथा के अन्तर्गत आने वाले सभी उत्सव धूमधाम से मनाया गाय था ।

संहिता पाठ के यजमान पद का प.भ. अनिशभाई शाह परिवार (मुंबई) ने लाभ लिया था । जिस के वक्ता स्वा. उत्तमप्रियदाजी थे । प्रात- सायं दोनो समय महाप्रसाद की सुंदर व्यवस्था की गई थी । इस व्यवस्था में शा.स्वा. माधवप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में युवक मंडल तथा महिला मंडल ने उत्तम सेवा की थी । कथा के समय सभा संचालन प्रेमस्वरुपदासजी तथा स्वा. जयेन्द्रप्राकशदासजीने किया था ।

समापन के समय प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री पधारी थी तथा कथा श्रवण करके बहनो को दर्शन एवं आशीर्वाद का लाभ दी थी ।

कथा की पूर्णाहुति में महंत स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर) तथा शा. माधव स्वामी यजमान का सन्मान करके आशीर्वाद दिये थे । सायंकाल ४ बजे सह यजमान प.भ. धरमशीभाई नरसीबाई पटेल के निवास स्थान से पोथीजी, ठाकुरजी संत-हरिभक्त गाजेबाजे के साथ पदार्पण किये थे । १४ वां ज्ञानसत्र श्रीहरिकृपा से पूर्ण हुआ था । (कोठारी मयुर भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच कथा-महापूजा-हिंडोला

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच-बापूनगर में पवित्र श्रावण मास में ता. २४-७-१७ से ता. ३०-७-१७ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई।

ता. ३०-७-१७ को २११ भक्त समूह महापूजा का लाभ लिये थे।

पवित्र श्रावण मास में ठाकुरजी को अलंकृत झूले में झुलाया गया था। महापूजा की पूर्णाहुति के समय प.पू. लालजी महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। महापूजा की आरती करके सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद देते हुए कहे कि श्री नरनारायणदेव में आप लोग जितनी दृढता के साथ निष्ठा रखेंगे उतनी आप लोगों की सन्तान को लाभ मिलेगा। मंदिर में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज का दर्शन करके सभी स्थान पर प्रस्थान किये थे।

प.भ. कालुभाई गजेरा की तरफ से सभी को भोजन की व्यवस्था की गई थी। समग्र प्रसंग में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी।

(गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल ज्ञानसत्र हिंडोला दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के महंत स्वामीकी प्रेरणा से तथा डॉ. अमृतभाई पटेल के मार्गदर्शन में ता. ३१-७-१७ से ता. ६-८-१७ तक श्री वासुदेव माहात्म्य रात्रि कथा महंत स्वामी ध्यानप्रियदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई थी। पूर्णाहुति के समय कालुपुर मंदिर से महंत स्वामी पधारे थे। तथा अन्य संत भी पधारे थे।

ता. ५-८-१७ को रात्रि में बावला मंदिर के युवक मंडल द्वारा भोजन कराया गया था। कथा के मुख्य यजमान चतुभाई पटेल का परिवार था।

श्रावण मास में हरिभक्तों के प्रयास से भगवान को सुंदर अलंकृत झूले पर झुलाया गया था।

ता. १४-८-१७ को कोठारी तथा आर.वी. पटेल के आयोजन द्वारा गढडा, धोलेरा, सारंगपुर का बस द्वारा दर्शन कराया गया था। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तथा १५ अगस्त दोनो एक दिन होने से धुन-कीर्तन के साथ रात्रि १२ बजे जन्मोत्सव की आरती उतारी गई थी। बोपल, आंबली, धुमा, मणीपुर के भक्तों को लाभ मिला था।

(प्रवीण उपाध्याय - बोपल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर में महिला कथा पारायण

अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजीश्री की आज्ञा से तथा हिंमतनगर के महंत स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में ता. ११-८-१७ से ता. १३-८-१७ तक त्रिदिनात्मक कथा सां.यो. भारतीबा के वक्तापद पर हुई थी। कथा के अन्तर्गत श्री घनश्याम महोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। यजमान शारदाबहन गोविंदभाई पटेल थी। समूह महापूजा का भी आयोजन किया गया था। पूर्णाहुति के प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी ठाकुरजी की आरती उतारकर सभी बहनों को आशीर्वाद प्रदान की थी।

महापूजा तथा भोजन की यजमान दक्षाबहन भीखाभाई शेठ तथा कथा की यजमान शांताबहन ईश्वरभाई पटेल एवं प.पू. गादीवालजी के रहने की व्यवस्था की यजमान प्रतिभाबहन सुथार थी। समग्र आयोजन यहाँ के महंत स्वामी तथा श्री जसुभाई पटेलने किया था।। श्री घनश्याम महिला मंडल तथा श्री न.ना. युक मंडल की सेवा सराहनीय थी। (जय एम. पटेल - हिंमतनगर)

धरमपुर (भुंडीया) गाँव में श्रावण मास में १२ घन्टे की अखंड महाधुन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा-आज्ञा से गांधीनगर के महंत स्वामी के मार्गदर्शन से धरमपुर गाँव में ता. १८-८-१७ एकादशी को १२ घन्टे की महिला तथा पुरुष सभी मिलकर श्री स्वामिनारायण मंत्र की धुन किये थे। पी.पी. स्वामी तथा बालस्वरुप स्वामीने भगवान की महिमा को अच्छी तरह समझाया था।

(घनश्यामसिंह राणा - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा हिंडोला दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नालंदा-२ मोडासा में श्रावण में घनश्याम महाराज को अनेक विधअलंकार से झूले को सजाकर झुलाया गया था।

सम्पूर्ण झूले की जो भी सेवा थी के.वी. प्रजापति, रजनीभाई, नारायणभाई पटेल, पुजारीश्री तथा घनश्याम महिला मंडल सेवा कार्य में लगी थी।

गाँव के हरिभक्त झूले का दर्शन करके धन्य हो गये।

(के.वी. प्रजापति - मोडासा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नांदोल हिंडोला दर्शन श्री कृष्णजन्माष्टमी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में आषाढ कृष्ण-२ से श्रावण कृष्ण-२ तक ठाकुरजी को अनेकविधवस्तुओं से झूले को सजाकर झुलाया गया था। झूले की सेवा पुजारीजी भगत दादा तथा सभी भक्तोंने की थी।

जन्माष्टमी की रात्रि में बालकों द्वारा भजन-कीर्तन प्रदर्शित किया गया था। स्वामिनारायण महिला मंडल ने भी ''लगनी लागी नारायण नामनी रे'' इस कीर्तन को नाटक के रुप में प्रदर्शित किया गया था। बालकों को प्रोत्साहित इनाम भी दिया गया था। माणसा मंदिर से नंदकिशोर स्वामी कथा वार्ता सुनाकर आनंदित किये थे।

(को. विष्णुभाई तथा समस्त हरिभक्त)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) कुंडाल (कडी) अखंड धून

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कुंडाल में ता. १८-८-१७ अजा एकादशी को उत्सव को निमित्त प्रातः ६ बजे से सायं ६ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून सभी बहने मिलकर की थी। इस गाँव की सभी महिलायें इस कार्यक्रम का ली थी। अंत में सभी को फलाहार के रुप में अल्पाहार दिया गया था। गाँव में धर्मकुल की कृपा से सत्संग अच्छा चल रहा है।

(पटेल लाभुबहन मनुभाई - कुंडाल)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में जन्माष्टमी का उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के महंत स.गु. स्वामी श्यामसुंददासजी की प्रेरणा से श्रावण कृष्ण-८ ता. १५-८-१७ को जन्माष्टमी का उत्सव धूमधाम से किया गया था।

इस प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। सभा मंडल में विराजमान होकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। श्रावण मास में श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धकी कथा स्वामी घनश्यामप्रकासदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई थी। अनेक धामों से संत-सांख्यायोगी बहने तथा हरिभक्त पधारे थे। कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी, व्रज स्वामी, भरत भगत तथा हरिभक्त सेवा में लगे रहे। सभा संचालन श्री शैलेन्द्रसिंह झालाने किया था। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर हिंडोला दर्शन तथा कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से संप्रदाय में परंपरागत अलंकृत झूले पर ठाकुरजी को झुलाया गया था। झूले पर झूलते हुए प्रभु को देखकर सभी मोक्ष का सुख प्राप्त कर रहे थे। समग्र प्रसंग को दैनिक समाचार पत्र तथा इलोक्ट्रोनिक मीडिया ने प्रसारण करके सभी को दर्शन का लाभ दिया था। श्री पंकजभाई परीख के मार्गदर्शन में श्री न.ना.देव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी।

श्रावण मासमें श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण

ता. १६-८-१७ से २१-८-१७ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन की कथा स्वामी त्यागवल्लभदासजी के वक्ता पद पर संपन्न हुई थी। जिस में विशाल संख्या में हरिभक्त कथा श्रवण का लाभ लिये थे। सभा संचालन शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी ने किया था। कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन में श्री न.ना.युवक मंडल ने सुंदर सेवा का कार्य किया था। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

मोरबी में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी की आज्ञा से यहाँ के श्री राधाकृष्णदेव मूली तथा श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान प.भ. मनोजभाई उलीयावाला की माताजी मुक्ताबा का अक्षरवास होने से सत्संग सभा का आयोजन ता. २१-७-१७ को किया गया था। इस प्रसंग पर स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजी तथा उनके शिष्य मंडल एवं बहनों मे सां.यो. राजकुंवरबा तथा उषाबा इत्यादिने देव-आचार्य की महिमा का वर्णन की थी। (प्रति अनिल दुधरेजिया)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर इटास्का (शिकागो) १९ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से इटास्का श्री स्वामिनारायण मंदिर का १९ वां पाटोत्सव ता. २९-७-१७ से ता. ६-८-१७ तक प.पू. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में मनाया गया था।

इस उपलक्ष्य में श्री घनश्याम लीलामृत सागर ग्रंथ का नवाह पारायण महंत शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ.

सर्व प्रथम अखंड धून, पोथीयात्रा, कथामृतपान, श्रीहरियाग ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट, प.पू. आचार्य महाराजश्री के दर्शन-आशीर्वाद तथा संतो की प्रेर कवाणी सभीने सुनी । आई.एस.एस.ओ. संस्था का नूतन प्रोजक्ट ''देवस्य'' की महत्ता भावि पीढी के लाभार्थ है। इस बात को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने अपने आशीर्वाद में बताया था। इस अवसर पर संतो में वक्ताजी, पुजारी शांति स्वामी, श्रीवल्लभ स्वामी, जीष्णु स्वामी, नीलकंठ स्वामी, विवेक स्वामी, भक्तिनंदन स्वामी, व्रज स्वामी, हरिनंदन स्वामी, पार्षद नरेन्द्र भगतने भगवान की सर्वोपरिता का बात बताये थे।

इस प्रसंग पर पाटोत्सव के मुख्य यजमान अरविंदभाई रंजनबहन चौधरी, सह यजमान प.भ. चौधरी रईबहन मणीलाल, ज्योत्सनाबहन भरतभाई चौधरी, चौधरी वर्षाबहन भूपेन्द्रभाई, चौधरी शांतीबहन अमरभाई पारायण के मुख्य यजमान चौधरी जीवतबहन कचराजी चौधरी हीराबहन अमृतभाई, चौधरी संतोकबहन बलदेवभाई, चौधरी सरोजबहन, सह यजमान भानुभाई अभिषेक के यजमान ठक्कर विनोदभाई, सह यजमान ब्रह्मभट्ट डॉ. मनोजभाई, अन्नकूट के यजमान पटेल कांतिभाई, सहयजमान पटेल वासुदेवभाई, संतो के पूजन के यजमान चौधरी गोविंदभाई, यज्ञ के यजमान पटेल हरेशभाई इत्यादि भक्त यजमान पद का लाभ लिये छे।

यहाँ के मंदिर के पुजारी संत तथा अन्य पधारे हुए संत ठाकुरजी का षोडशोपचार पूजन किये थे। विशाल संख्या में हरिभक्तने दर्शन का लाभ लिये थे। (वसंत त्रिवेदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (यु.के.) १३ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा कालुपुर अमदावाद मंदिर के सुप्रसिद्ध कथाकार शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा ज्ञान स्वामी की उपस्थिति में लेस्टर का १३ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

उत्सर्व के निमित्त पवित्र श्रावण मास में शा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्ता पद पर श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा का पारायण संपन्न हुआ था। मंदिर में ठाकुरजी को अलंकृत झूले पर झुलाया गया था।

ता. १-८-१७ मंगलवार को ठाकुरजी का षोडशोपचार पूजन अभिषेक किया गया था। सत्संगी बहनों के द्वारा तैयार की पक्वान्न से ठाकुरजी का अन्नकूट किया गया। दोपहर में ध्वजारोहण का कार्यक्रम किया गया था। कथा के बाद सायंकाल भक्तों को महाप्रसाद का भोजन करवाया गया था। कथा में आनेवाले सभी प्रसंग धूमधाम से मनाये गये थे । यजमान परिवार का सन्मान शा.स्वा. निर्गुणदासजी के वरद् हाथों से किया गया था। संप्रदाय के देव-आचार्य के निष्ठावान मूर्धन्य विद्वान संत के मुख से कथाश्रवण करके सभी श्रोतागण अपने को धन्य मान रहे थे। (किरण भावसार - लेस्टर)

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो का १९ वें पाटोत्सव के प्रसंग पर सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(२) स्ट्रेथाम (यु.के.) मंदिर के २२ वें पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(३) कोलोनिया (अमेरिका) तथा क्रोली (यु.के.) मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।(४) लेस्टर (यु.के.) मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए श्री नरनारायणदेव के पुजारी ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी ।(५) श्री स्वामिनारायण मंदिर ब्लेकटाउन सीडनी में जन्माष्टमी महोत्सव ।

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से -

श्री स्वामिनारायण मंदिर पंचवटी-कलोल मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

२१ से २७ नवम्बर-२०१७

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

आई.एस.एस.ओ. श्री स्वामिनारायण मंदिर सीनामीन्सन (साउथजर्सी) के दशवे पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए तथा सभा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री एवं कथा करते हुए वक्ता स.गु. स्वा. नारायणवल्लभदासजी - वडनगर ।

श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम्

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के

४५ वें
जन्मोत्सव
प्रसंग पर

प.पू. आचार्य महाराजश्री संत एवं हरिभक्तों के साथ
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर से जेतलपुर पदयात्रा में पधारेंगे ।

ता. ३०-९-१७ शनिवार (विजया दशमी)

कालुपुर मंदिर से प्रातः ५-३० बजे प्रस्थान ।

पदयात्रा का रुट : कालुपुर मंदिर से खमासा, जमालपुर, दाणीलींमडा, चंडोला, नारोल चार रस्ता, लांभा रोड, असलाली, जेतलपुर ।

नोट : पदयात्रा में जो साथ में आना चाहते हैं ऐसे हरिभक्त कालुपुर मंदिर अथवा पदयात्रा के रुट पर समय से पहुंचे, पदयात्री अनुशासित ढंग से तथा शांतिपूर्व ढंग से स्वयं सेवको का सहयोग करेंगे ।

विशेष : प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से इस प्रसंग पर आनेवाली सभी भेंट अनाथ आश्रम के बालको के लाभार्थ होगी ।

Prafull Kharsani